S. S. College, Jehanabad
B. A. Part-I Subject - Psychology (Subsidiary)
Teacher — A. K. Sinha

Topic - Social Determinants of Personality
व्यक्तित्व के सामाजिक निर्धारक

'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' - यह कथन अरस्तू का है अतः इसके व्यक्तित्व विकास पर सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ना स्वभाविक प्रतीत होता है। वैसे तो व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में उसके वंशानुगत कारकों का अपना खास गुण होता है यथा - शारीरिक गठन, स्वर, मनोवृत्ति, बुद्धि, शीलगुण आदि परन्तु इसके विकास पर सामाजिक कारकों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। J. B. Watson का तो यह दावा है कि :-

" यदि मुझे एक दर्जन स्वस्थ सुगठित बच्चे दें और उनके पालन पोषण के लिए मेरी इच्छानुसार वातावरण दें तो मैं जिम्मा लेता हूँ कि उनमें से मैं जिस बच्चे को भी चुनूँ उसे प्रशिक्षण द्वारा किसी भी क्षेत्र का विशेषज्ञ बना दूँगा - डॉक्टर, वकील, कलाकार, मुख्य व्यापारी और चोर एवं भिखारी भी, चाहे बच्चे की योग्यता, झुकाव, प्रवृत्ति, क्षमता, व्यवसाय और उसके पूर्वज की जाति कुछ भी हो।"

Watson के उपर्युक्त दावा से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में सामाजिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण पर पड़ने वाले या प्रभावित करने वाले कारकों को निम्नांकित प्रमुख श्रेणियों में रखकर उल्लेख किया जा सकता है :-

1. - परिवार का प्रभाव (Family influence),
2. - पड़ोस का प्रभाव (Effect of Neighbourhood),
3. - स्कूल का प्रभाव (Effect of School),
4. - समुदाय का प्रभाव (Effect of Association)।

1 परिवार का प्रभाव (Family influence) :—
व्यक्ति की प्रारम्भिक विकास परिवार में ही होता है। अरस्तू के अनुसार, " परिवार सामाजिक जीवन का सर्वोत्तम पाठशाला होता है।"

शेष पृष्ठ 2 पर

अतः व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का निर्धारण पर परिवार महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्धारण में परिवार से सम्बन्धित निम्नांकित कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।:—

(i) पालन-पोषण की प्रणाली — बच्चों के व्यक्तित्व विकास अथवा निर्धारण पर परिवार द्वारा पालन-पोषण का प्रभाव पड़ता है। इस सम्बन्ध में Brody ने 32 नयी माताओं के बच्चा पोसने के ढंग का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँची कि सभी माताओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। एक वर्ग की माताएँ बच्चों की आवश्यकता के प्रति अधिक सजग रहती थी जबकि दूसरे वर्ग की माताएँ बच्चों की आवश्यकता पर ध्यान नहीं देती थी। इस प्रकार दोनों वर्गों की माताओं के पालन-पोषण की प्रणाली में भेद था जिससे उनके बच्चों का व्यक्तित्व भी प्रभावित हुआ। इसी प्रकार Sears, Maccoby and Levin ने 300 नई माताओं का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि माताओं के बीच (i) अनुज्ञापकता-कठोरता (ii) सामान्य पारिवारिक समायोजन (iii) मातृ-शिशु सम्बन्ध का उत्साह के भेद होते हैं जिसका प्रभाव उनके बच्चों के व्यक्तित्व विकास या निर्धारण पर पड़ता है। परन्तु Becker ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यवहार समस्याओं की उत्पत्ति में माता की तुलना में पिता का महत्व अधिक होता है। Watson के अनुसार अनुज्ञापक (Permissive) वातावरण में बच्चों का समाजीकरण अच्छा होता है, सहयोग की भावना बढ़ती है, शत्रुता कम होती है तथा सहजता, मौलिकता एवं सर्जनात्मकता अधिक होती है।

शेष पृष्ठ-3 पर

Erron के अनुसार जिन बच्चों को माता-पिता द्वारा दण्ड दिया जाता है वे दण्ड नहीं पानेवाले बच्चों की तुलना में अधिक आक्रमणशील होजाते हैं। Jenkins के अनुसार जिन बच्चों को माता-पिता का स्नेह नहीं मिलता है वे अपने को अस्वीकृत समझते हैं परिणाम स्वरूप वे आगे-चलकर असामाजिक, आक्रमणशील तथा अपराधी प्रवृत्ति के हो जाते हैं। उपर्युक्त अध्ययनों के अलावे भी इस सन्दर्भ में अनेक अध्ययन हुए हैं जिनके आधार पर यह कहना गलत न होगा कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास तथा निर्धारण में उनके पालन-पोषण की प्रणाली का गहरा प्रभाव पड़ता है।

(ii) माता-पिता का आपसी सम्बन्ध :— बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर उनके माता-पिता का पारस्परिक सम्बन्धों का गहरा प्रभाव पड़ता है। Cyril Burt के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि जिन बच्चों के माता-पिता के पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे नहीं होते हैं उनके बच्चों में संतुलित व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है। ऐसे घरों को सीरिल बर्ट ने टूटे हुए घर की संज्ञा दी है। इस तथ्य की पुष्टि Woolkind और Rutter के अध्ययन से भी होती है। इसके परिणाम स्वरूप — ऐसे बच्चे घरों में अपने माता-पिता का उपयुक्त स्नेह और प्यार नहीं प्राप्त कर पाते और वे शीघ्र ही समाज के अवांछित तत्वों के सम्पर्क में आ जाते हैं और उनके व्यक्तित्व विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है। परिणाम स्वरूप अपने माता-पिता के अनअपेक्षित व्यवहारों को ग्रहण कर लेते हैं। अतः बच्चों के व्यक्तित्व विकास में माता-पिता के आपसी सम्बन्धों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

(iii) सौतेले माता-पिता का प्रभाव — जिन बच्चों के पिता यदि दूसरी शादी कर लेते हैं या माता दूसरी शादी कर लेती है तो ऐसे बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर सौतेलेपन का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक हो जाता है।

शेष पृष्ठ-4 पर

(iv) भाई-बहन (Sibling) के साथ सम्बन्ध →

परिवार में छोटे-बड़े भाई-बहनों की उपस्थिति से पारिवारिक वातावरण प्रभावित हो जाता है। पहला बच्चा अधिक दिनों तक माता-पिता का ध्यानकेन्द्र बना रहता है जबकि दूसरा बच्चा जन्म लेते ही बड़ा निराश हो जाता है परिणामस्वरूप बच्चे असन्तुष्ट हो जाते हैं। बच्चे शीघ्र ही अपने भाई-बहन को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने लगते हैं।

Adler ने व्यक्तित्व विकास में बच्चों के जन्मक्रम के महत्व को स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध में McClelland, Winterbottom तथा Sampson आदि मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन किया और पाया कि जन्मक्रम में भिन्नता होने के फलस्वरूप एक ही परिवार के विभिन्न बच्चों के व्यक्तित्व-गुण भिन्न-भिन्न हुआ करते हैं। सहोदरों के यौन संयोग एवं यौन-वितरण का भी अध्ययन किया गया है और देखा गया है कि यौन संयोग एवं वितरण की भिन्नता का प्रभाव व्यक्तित्व के निर्माण में अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

उपर्युक्त अध्ययनों एवं साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चों के अपने भाई-बहन के साथ सम्बन्धों का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

इस प्रकार परिवार बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं निर्धारण में उपर्युक्त चार बिन्दुओं के आधार पर प्रभावित करता है।